(६) सुनकर वाणी जिनवर की...

सुनकर वाणी जिनवर की, म्हारे हर्ष हिये न समाय जी ॥ टेक ॥

काल अनादि की तपन बुझायी, निज निधि मिली अथाह है ॥ 1 ॥

संशय भ्रम और विपर्यय नाशा, सम्यग्बुधि उपजाय जी ॥ 2 ॥

नर भव सफल भयो अब मेरो बुधजन भेंटत पाय जी ॥ 3 ॥